लेबर एक्सप्रेस

(प्रवासी श्रमिकों व युवाओं की आजीविका की बेहतरी के लिए प्रयासरत)

अंक : 9 अगस्त–अक्टूबर 2010 निःशुल्क एवं निजी वितरण हेतु

बरसो रे मेघा मेघा...

सभी को नमस्कार ! पिघला देने वाली गर्मी के बाद अब मानसून आ गया है। क्या गर्मी पडी है इस बार ! शहरों में तो और भी हालत खराब हो गए हैं। क्या करें ? काम के लिए रहना तो वहीं है। बारिश की खबर मिलते ही आप में से कुछ लोग अपने–अपने घरों को लौटे होंगे। खेती में से कुछ लेना है तो यही समय है। कहते भी तो हैं– खेती तो जुआ है समय पर चेत गए तो ठीक। नही तो, फिर कुछ हाथ नहीं आता है।

चलिए, बारिश के बहाने ही सही कुछ लोग अपने घर आएंगे। बहाना कोई भी हो, घर आना तो हमेशा ही अच्छा लगता है। लम्बे समय तक बाहर रहकर कुछ दिनों के लिए घर लौटना और बुजुर्गों, भाई–बहनों, पत्नी और बच्चों के सुख–दुख के बारे में जानना कौन नहीं चाहता।

सच, परिवार से दूर रहते हुए अपने लोगों की याद तो आती ही है, लेकिन उनसे जुड़ी चिन्ताएं भी बहुत सताती है। कभी–कभी लगता है कि कोई होता जो हमारी गैर हाजरी में भी परिवार की मदद कर दें पत्नी या बच्चे बीमार हो जाएं तो उन्हें तुरन्त अस्पताल पंहुचा दें। रोजगार गारन्टी में काम नहीं मिल रहा हो तो मदद कर दें। या फिर, घर में छोटी–मोटी आमदनी के लिए तरीके बता दें। पैसों की छोटी जरुरतों की पूर्ति कर दें ताकि हम शान्ति से काम कमाई कर सकें। तो बस, आपके मन की मुराद पूरी होने ही वाली है। ब्यूरो ने अभी कुछ चुनिन्दा क्षेत्रों में इस तरह की कोशिश शुरु की है। उन परिवारों को विशेष रुप से मदद देने का काम है, जिनसे आप जैसे प्रवासी भाई बाहर जाकर काम करते है। लेकिन जहां पर इसकी शुरुआत नहीं हुई है वे लोग भी अपने निकटतम श्रमिक केन्द्रों पर जाकर अपनी जरुरत बता सकते हैं। आपकी जरुरतों के मुताबिक काम करना तो श्रमिक केन्द्रों का फर्ज है ही।

इस बार के 'लेबर एक्सप्रेस' में एक महत्वपूर्ण जानकारी निर्माण काम करने वाले यानि कारीगर, मिस्त्री, हेल्पर महिला पुरुषों के लिए है। राजस्थान सरकार ने श्रमिक कल्याण बोर्ड का गठन कर उसके लिए आवेदन की प्रक्रिया शुरु कर दी है। योजना फायदे की है। इसके बारे में पढ़कर इसका लाभ उठाना मत भूलना।

सपने होंगे साकार

निर्माण श्रमिक कल्याण बोर्ड हेतु राज्य सरकार की महत्वपूर्ण पहल

राजस्थान सरकार ने आखिरकार निर्माण कार्य करने वाले श्रमिकों के लिए श्रमिक कल्याण बोर्ड को सक्रिय करने की पहल शुरु कर दी है। श्रम और नियोजन विभाग ने इसकी कमान संभाली है। फिलहाल इसमें निर्माण कार्य करने वाले श्रमिकों के पंजीकरण का काम शुरु हुआ है।

श्रमिक कल्याण बोर्ड का मुख्य उद्देश्य मकान निर्माण के काम करने वाले श्रमिकों कारीगरों, मिस्त्रियों, हेल्पर इत्यादि को अलग अलग प्रकार की कल्याणकारी योजनाओं से जोड़ना है। शुरुआत में इसमें आठ तरह की योजनाओं का प्रावधान रखा गया है।

इन योजनाओं में मुख्य रुप से श्रमिकों को वृद्वावस्था पेंशन, दुर्घटना होने पर तुरन्त सहायता, स्वयं का मकान बनाने के लिए ऋण सुविधा, समूह में काम करने वालों का बीमा, बच्चों की शिक्षा के मदद, महिला श्रमिकों को सुखद मातृत्व के लिए भत्ता, गंभीर बीमारियों में इलाज की मदद इत्यादि को शामिल किया गया है। ध्यान देने की बात है कि बोर्ड की योजनाओं का लाभ इसमें पंजीकृत श्रमिकों को मिल पाएगा।

श्रमिकों को मिलेगें ये फायदे

- दुर्घटना होने पर तुरन्त मदद
- बुढापे में पेंशन
- स्वयं का मकान बनाने के लिए ऋण
- समूह बीमा का लाभ
- बच्चों की शिक्षा के लिए आर्थिक सहायता
- महिला श्रमिकों मातृत्व भत्ता
- गंभीर बीमारियों में इलाज की सुविधा
- अन्य लाभदायक याजनाएं

पंजीकरण कैसे कराएं ?

बोर्ड में पंजीकरण के के लिए एक आवेदन पत्र है। यह श्रम विभाग से प्राप्त किया जा सकता है। कहीं कहीं पर ये आवेदन पत्र श्रम विभाग ने कुछ संस्थाओं और श्रमिक संगठनों को भी दिए हैं। उदयपुर, राजसमन्द, डूंगरपूर तथा बासंवाडा जिलों में श्रमिक सहायता एवं सन्दर्भ केन्द्रों पर बोर्ड के पंजीकरण के आवेदन पत्र उपलब्ध हैं। आवेदन में श्रमिक को अपनी जानकारी भरनी होगी। आपने पिछले 12 महीनों में कहां पर निर्माण से जुड़े कार्य किए। मालिक के बारे में संक्षिप्त जानकारी भरनी होती है।

आवेदन का शुल्क मात्र पच्चीस रुपए है। तीन रंगीन पासपोर्ट आकर के फोटो व निर्माण श्रमिक होने का प्रमाण साथ में लगाना होता है। इसमें श्रमिक परिचय पत्र या किसी श्रमिक संघ का

(शेष पृष्ठ 2 पर)

और खुल गई दुकान

भीखालाल पटेल रोजी–रोटी के लिए पहले अहमदाबाद गया। फिर खाड़ी देश का सफर किया। वहां कमाई तो दूर उलटे कर्जा हो गया। वहां से उलटे पांव लौटना पड़ा। फिर मोबाइल मरम्मत का काम सीखा। आज भीखालाल खेरवाड़ा में खुद की दुकान चलाकर अच्छा कमा रहा है।

22 वर्ष का भीखालाल उदयपुर जिले की खेरवाड़ा तहसील के कोजावाड़ा गांव का रहने वाला है। आर्थिक तंगी की वजह से दसवीं कक्षा पास करने के बाद पढ़ाई छोड़नी पड़ी। अपने गांव के साथियों के साथ अहमदाबाद होटल में काम करना शुरू कर दिया। होटल का माहौल रास नहीं आया। बीमार होकर गांव लौटना पड़ा। गांव में तबियत तो ठीक हो गई लेकिन वापस अहमदाबाद होटल में जाने का मन नहीं बना। भीखालाल के गांव से कई लोग कुवैत में रोजगार के लिए जाते हैं। काफी पैसा भी कमाकर लाते हैं। यही सोचकर भीखालाल ने भी कुवैत जाने का मन बनाया। इनके पिताजी ने जैसे तैसे कर्ज लेकर पासपोर्ट व टिकट का इंतजाम कर दिया। भीखालाल मन मे ढेर सारा धन कमाने के सपने संजोये कुवैत के लिए उड़ चला।

भीखालाल कुवैत पहुंच तो गया किन्तु इन्हें कुवैत में रहने की अनुमति नहीं मिली। फलस्वरूप बैरंग लौटना पड़ा। कोई कमाई नहीं हुई उलटा कर्जा भी हो गया। फिर भी भीखालाल ने हार नहीं मानी। एक बार फिर कर्जा लेकर

कुवैत पहुंच गया। वहां डेकोरेशन का काम करने लगा। काफी मुसीबत भी झेलनी पड़ रही थीं। काफी काम करना पड़ा, पगार समय पर नहीं मिलती। कर्जा चुकाने के लिए जैसे–तैसे पांच वर्षों का समय वहां पर गुजारा। सारा कर्जा तो चुक गया किन्तु कुछ भी बचत नहीं हो पाई। भीखालाल को यह मलाल था कि कुवैत कुछ हुनर वाला काम सीखकर जाते तो उन्हें ज्यादा पैसा मिलता। अब भीखालाल को आसपास ही हुनरमंद काम की तलाश थी। गांव में सेवा मंदिर संस्था से पता लगा कि आजीविका ब्यूरो मोबाइल मरम्मत का प्रशिक्षण शुरू करने वाली है। फिर क्या था भीखालाल पहुंच गए प्रशिक्षण लेने।

भीखालाल ने प्रशिक्षण के सभी नियमों का पूरा पालन किया। एक माह तक लगातार पूरी लगन से काम सीखा। कुछ समय उदयपुर में मोबाइल की दुकान पर काम किया। एक महीने के अंदर बैंक से करीब 50 हजार का ऋण लेकर खुद की दुकान खोल ली। दुकान में सभी औजार व मशीनरी हैं। एक कंप्यूटर भी लगा रखा है। आज भीखालाल दिन के हजार से बारह सौ रुपए कमा लेता है। वह कहता है कि अपने देश मे ही हुनर का काम सीखकर अच्छा पैसा कमाया जा सकता है। &egUnz eh.kk

गुल्लक थारे पास, चाबी म्हारे पास

सब मानते हैं कि बचत करना बेहद जरूरी है। बचत से भविष्य की जरूरतों की पूर्ति होती हैं। बचत से लिया गया कर्जा चुकाना आसान हो सकता है।

किन्तु मजदूर कैसे अपने पसीने की गाढ़ी कमाई बचाए ? एक तो कम मजदूरी। उसका भी समय पर नहीं मिलना। बैंक व डाकघर छोटी बचतों के लिए खूब प्रयास भी करते हैं। दूर–दराज के गांवों से छोटी–छोटी राशि ले जाकर बैंक तक पहुंच पाना ही काफी मंहगा पड़ता है। मजदूरी छोड़कर अलग से बैंक के लिए समय निकालना भी मुश्किल है।

इसी समस्या का हल निकाला है 'श्रम सारथी' नाम की कंपनी ने। कंपनी का मानना है कि मजदूरों के पास रोज का खर्चा निकालने के बाद बहुत छोटी राशि बचती है। इन रुपयों को कहां बचा कर रखें। इसके लिए साधन की जरूरत होती है। कंपनी ने इसी को ध्यान में रखा है।

'श्रम सारथी' द्वारा श्रमिकों का गुल्लक बचत खाता खोला जा रहा है। इसमें एक गुल्लक दी जा रही है। गुल्लक के साथ ही बचत पास बुक भी मिलती है।

यह गुल्लक श्रमिक के पास ही रहती है। इसमें ताला लगा होता है। गुल्लक की चाबी 'श्रम सारथी' अपने पास रखती है। मजदूर इस गुल्लक में रोज की बचत चाहे कितनी भी हो डाल सकता है। हर महीने 'श्रम सारथी' के अधिकारी गुल्लक के ताले खोलते हैं। गुल्लक में जमा निकली राशि को बचत पास बुक में लिखा जाता है। गुल्लक श्रमिक समुदाय में काफी पसन्द आ रही है। इससे अभी तक 878 लोग जुड़ चुके हैं। –दिनेश शर्मा

ऐसे बचाया गुल्लक में

(1) उदयपुर जिले की गोगुन्दा तहसील की काछबा पंचायत के लच्छीराम गमेती। महाराष्ट्र में कई वर्षों तक रसोई का काम किया। सालभर पहले श्रम सारथी से ऋण लेकर गांव में ही चाय की थड़ी लगाई। इनका गुल्लक बचत खाता भी है। ये गुल्लक में रोज 30 से 40 रुपए डालकर महीने में 600 से 700 रुपए बचा लेते हैं। इन्होंने बैंक में खाता भी खुलवा लिया है। पेंशन योजना की रकम भी इसी बचत से जमा करा रहे हैं। अपने ऋण की किश्त भी आसानी से निकाल रहे हैं।

***

(2) गोगुन्दा की पाटिया पंचायत के तख्ताराम गमेती बेलदारी करते हैं। इन्होंने गुल्लक में रोज कम से कम 20 रुपए डालने का नियम बनाया है। हर माह इनकी गुल्लक से 700 से 800 रुपए निकलते हैं। एक बार तो इनकी बचत 1200 रुपए तक की हो गई थी।

***

(3) बाबूलाल गमेती गांव में किराना की दुकान करते हैं। गुल्लक में रोज 60 रुपए डालते हैं। इस तरह हर माह 1800 रुपए तक बचा लेते हैं। बाबूलाल ने बैंक में खाता खुलवा रखा है। बीमा योजना से जुड़े हुए हैं। यह बचत इनके दुकान में सामान बढ़ाने में मदद करती है।

सपने होंगे साकार

(पृष्ठ एक का शेष)

सत्यापन करवाना होता है। अपने वर्तमान मालिक द्वारा दिया गया प्रमाण पत्र भी मान्य है। पूर्ण भरा हुआ आवेदन जमा करवाने पर श्रम विभाग द्वारा एक रसीद दी जाती है।

पंजीकरण होने पर श्रमिक को एक पास बुक जैसा परिचय पत्र जारी किया जाएगा। पंजीकृत श्रमिकों को बोर्ड की समस्त योजनाओं का आवश्यकता पर फायदा मिलेगा।

आजीविका ब्यूरो में अगस्त 2010 तक

श्रमिकों के पंजीयन व परिचय पत्र

43913

- ब्यूरो द्वारा बनाए जा रहे परिचय पत्र का शुल्क अब 15 रुपए कर दिया गया है।
- श्रम विभाग को हर तीन माह में श्रमिकों के पंजीयन की नाम–पता सहित पूरी जानकारी भिजवाई जाती है।

प्रवासी श्रमिकों को भी मिले आधार : संस्थाओं के साझा मंच का समझौता

पहचान के लिए होगा आधार

राष्ट्रीय प्रवासी श्रमिक सुरक्षा मंच ने भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण के साथ एक समझौता किया है। यह मंच भारत सरकार द्वारा देश के नागरिकों के लिए शुरू हुए "आधार" कार्यक्रम से प्रवासी श्रमिकों को जोड़ने में विशेष प्रयास करेगा। यह समझौता 29 जुलाई को मुम्बई में हुआ। प्राधिकरण के उप महानिदेशक एन के सिन्हा तथा साझा मंच की ओर से आजीविका ब्यूरो के निदेशक राजीव खण्डेलवाल ने इस समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं।

भारत सरकार ने भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (यूआईडीएआई) का गठन किया है। यह प्राधिकरण भारत देश के प्रत्येक नागरिक को विशेष पहचान संख्या उपलब्ध कराएगा ताकि लोगों को अपनी पहचान साबित करना आसान हो। प्राधिकरण ने इस कार्यक्रम को 'आधार' नाम दिया है।

प्रवासी श्रमिकों की पहचान का मुद्दा राष्ट्रीय स्तर पर सरकार के सामने लाया जाए। प्रवासी श्रमिकों के लिए विशेष सेवाएं व आवश्यक योजनाएं तैयार की जाएं। इसी मकसद से देश में प्रवासी श्रमिकों के लिए अलग–अलग राज्यों में काम कर रही संस्थाओं ने राष्ट्रीय स्तर पर एक साझा मंच का गठन किया है। साझा मंच में देशभर की करीब 25 संस्थाएं शामिल हैं।

याद रहे राजस्थान सहित देश के कई राज्यों गुजरात, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा व बिहार में प्रवासी श्रमिकों के साथ काम की शुरुआत हो चुकी है। इन राज्यों की कुछ संस्थाओं द्वारा आजीविका ब्यूरो की तरह ही श्रमिक सहायता केन्द्रों का संचालन किया जा रहा है।

यह साफ है कि प्रवासी श्रमिकों से जुड़ी समस्याएं किसी क्षेत्र विशेष की ना रहकर राष्ट्रीय स्तर की हैं। इसलिए इनके समाधान हेतु जरूरी है राष्ट्रीय स्तर पर साथ मिलकर पैरवी की जाए।

इसी दिशा में संस्थाओं के साझा मंच ने प्राधिकरण का ध्यान प्रवासी श्रमिकों की समस्याओं की ओर खींचा है। प्राधिकरण ने भी कदम बढ़ाते हुए प्रवासी श्रमिकों को 'आधार' कार्यक्रम में विशेष महत्व दिया है। प्राधिकरण ने साझा मंच के साथ कई बैठकें की हैं। बैठकों के अलावा प्रवासी श्रमिकों के समूहों से भी संपर्क किया है ताकि इनकी जरूरतों को बेहतर समझकर कदम उठाए जा सकें। इसी का नतीजा है कि प्राधिकरण व साझा मंच ने 'आधार' कार्यक्रम में मिलकर काम करने के लिए लिखित समझौता किया है।

भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकारण द्वारा हर नागरिक को शारीरिक पहचान के आधार पर एक संख्या दी जाएगी। यह संख्या ही देश में व्यक्ति को अपनी पहचान साबित करने में काफी सहायक सिद्ध होगी। विशेष पहचान संख्या से श्रमिकों को आवश्यक सेवाएं जैसे बैंक से जुड़ाव, सामाजिक सुरक्षा व सरकारी योजनाओं को प्राप्त करना भी आसान होगा। नई सेवाएं व योजनाएं भी बनाई जाएंगी। कोशिश की जा रही है कि राशन व स्वास्थ्य जैसी महत्वपूर्ण सुविधाओं को 'आधार' से जोड़ा जाए।

साझा मंच 'आधार' कार्यक्रम की जानकारी प्रवासी श्रमिकों तक पहुंचाएगा। श्रमिकों को इससे जुड़ने के लिए प्रेरित करेगा। संस्थाओं के इस साझा मंच की संयोजिका दिशा संस्थान, महाराष्ट्र की अंजलि बोर्डे हैं।

क्या है 'आधार'

देश के हरेक नागरिक को एक विशेष संख्या से पहचाना जाएगा। देश के नागरिकों के फोटो, अंगुलियों तथा आंखों के निशान के आधार पर विशेष संख्या दी जाएगी। इसे बायोमिट्रिक प्रणाली कहा जाता है। इस संख्या तथा व्यक्ति की सूचना मुख्य कंप्यूटर में दर्ज होगी। यह कार्यक्रम भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण द्वारा चलाया जा रहा है। प्राधिकरण ने इस कार्यक्रम को 'आधार' नाम दिया है। देश में इस कार्यक्रम की शुरुआत हो चुकी है। प्राधिकरण जगह–जगह पर इसके लिए विशेष शिविर लगाएगा। इसकी सूचना विज्ञापन, अखबार, टेलिविजन के माध्यमों से जन–जन तक पहुंचाई जाएगी।

आपकी आवाज बनेगा संघ

दक्षिण राजस्थान में निर्माण काम से जुडे कामगारों के लिए खुशखबरी है। तहसील स्तर पर चल रहे कई श्रमिक संगठनों के सदस्यों ने मिलकर संभाग स्तर के एक संगठन तैयार कर लिया है। श्रम विभाग, उदयपुर में इस संगठन का पंजीकरण भी करवाया है। इसका नाम अरावली निर्माण मजदूर सुरक्षा संघ रखा है।

इस संघ को बनाने के पीछे मुख्य मकसद निर्माण कार्य से जुडे श्रमिक भाइयों व बहनों की काम से जुड़ी समस्याओं को सामने लाना व उनके समाधान के लिए प्रयास करना है। यह बताना जरुरी है कि यह संघ न केवल श्रमिक समस्याओं पर काम करेगा बल्कि श्रमिकों के लिए नई योजनाओं को जरुरतमन्दों तक पंहुचाने का काम भी करेगा। यह संघ शहर में आकर काम करने वाले श्रमिकों के लिए चौकटियों पर सुविधाओं के लिए प्रयास करेगा। श्रमिकों व मालिकों के बीच होने वाले विवादों के समाधान कराने में भी सहयोग करेगा।

राज्य स्तर पर भी जयपुर में राजस्थान विश्वकर्मा निर्माण मजदूर संघ का पंजीयन हुआ है। निर्माण श्रमिकों की कई समस्याएं हैं। इनके समाधान के लिए सरकार, प्रशासन और विभागों में नियमित पैरवी करने की जरुरत है। यह काम संघ प्राथमिकता से करेगा।

आजीविका ब्यूरो में अगस्त 2010 तक

पेंशन योजना	बैंक खाते
1730	**825**
राज्य सरकार ने मजदूरों के लिए विश्वकर्मा अंशदायी पेंशन योजना शुरू की है।	श्रमिक परिचय पत्र के आधार पर श्रमिकों के जीरो बैलेंस पर बैंक खाते खुले हैं।

नौजवानों की कलम

जब हो रोजगार की आस,

दोस्तों का कहना है

हमारे दोस्तों ने मेरे चेन्नई जाने पर कहा। वहां पर तो गुण्डागर्दी है। चोरी ज्यादा होती है। बच कर रहना। वहां रोटी नहीं मिलती। लोग वहां चावल और मछली ही खाते हैं। वहां का वातावरण गरम है। नारियल के पेड हैं। तमिल भाषा बोलते है।

दोस्तों ने कहा कि बाहर जाकर तुम अच्छा कर रहे हो। वहां मजदूरी भी ज्यादा है। बाहर जाकर दुनिया के रहन–सहन के तरीके देखने को मिलेंगे।

अंत में ये भी कहा कि वहां कपड़ा और सोना सस्ता मिलता है। वापस आओ तो लेकर आना। **–उदयलाल चौहान, वल्लभनगर जिला उदयपुर, पूना काठात, मसूदा जिला अजमेर, देवीसिंह, कुम्भलगढ जिला राजसमन्द**

अपने घर में भी है रोटी

मैं चेन्नई में इलैक्ट्रिकल के काम में जा रहा हूं। मेरे पापा ने मुझसे कहा कि दुनिया में कहीं भी रहो पर सच्चाई और ईमानदारी से पैसा कमाओ। कोई गलत काम मत करना। दोस्तों ने कहा ''बैस्ट ऑफ लक''।

गांववालो का कहना था कि यहीं चेन्नई है। बाहर जाना अच्छा नहीं है। कुछ लोग कहते हैं आधी मिले तो आधी खाओ, गांव छोड़ कहीं मत जाओ।

इस पर मेरा मत साफ है कि कहीं भी रहो पर पैसा सच्चाई से कमाओ। **–मनोज कुमार श्रीमाली, बरवाड़ा जिला उदयपुर एवं नारायण काठात, मसूदा जिला अजमेर**

कुछ कर दिखाना है

जिंदगी में सफल होने के लिए हमें कुछ न कुछ खोना पड़ता है। मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। अपने घर परिवार से दूर जाना ही पडता है। अगर हम ये नहीं छोड़ सकते

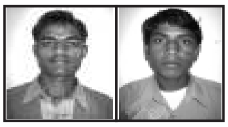

तो हम आसानी से सफल नहीं हो सकते। हम लोग अपने घर से दूर चेन्नई जा रहे हैं। वहां निर्माण कार्यों के बारे में सीखेंगे। पूरा अनुभव लेंगे। कहते भी हैं खुद के मरे बिना स्वर्ग नहीं मिलता। **–कालूसिंह खरबड़ मोरचा, तह. कुम्भलगढ़, जिला राजसमंद एवं दीपसिंह चौहान, भुवाणा, उदयपुर**

ये हैं हमारे सपने

हम अच्छा काम सीखना चाहते हैं। कुछ बनकर दिखाना चाहता हैं। हमें परिवार संभालना है। सीसीसीएल कंपनी भारत की नंबर वन कंपनी है। आगे भी इसी कंपनी में ही नौकरी करना चाहते हैं। इससे हमारे परिवारवालों को खुश रखना चाहते हैं।

आजीविका ब्यूरो का नाम भी रोशन करना चाहते हैं। हम अपने काम में कुशल बनाना चाहते हैं। **–मुकेश कुमार पाण्डोर, शैलेष मीणा, राजकुमार असोड़ा व अनिल कुमार मीणा, खेरवाडा जिला उदयपुर, प्रतीक सोनी व राकेश पांचाल गढ़ी जिला बांसवाड़ा, रविन्द्र सिंह राणावत, बागीदौरा जिला बांसवाड़ा**

आपको भी जाना चाहिए

इस तरह के अवसर

युवाओं के लिए मिलने जरूरी हैं। आजीविका ब्यूरो ने हमें काफी सिखाया है। चेन्नई जाने वाले युवाओं को इसे ध्यान रखना चाहिए।

अन्य युवाओं को भी इस काम से जुड़ना चाहिए। बेरोजगार साथियों को इसमें जाना चाहिए। **–रामअवतार यादव, पीपलू जिला टोंक एवं महेन्द्र सिंह सिसोदिया, सलूम्बर जिला उदयपुर**

क्या है सीसीसीएल कंपनी

सीसीसीएल भारत की सबसे बड़ी निर्माण कंपनियों में से एक है। वर्तमान में भारत सरकार से 1218 करोड़ रुपए के काम इस कंपनी को मिले हैं इसमें चेन्नई एवं गोवा हवाई अड्डे के विस्तार का काम इनके पास है। बड़ी इमारतों, राजमार्ग, बांध जैसे बडे निर्माण काम कंपनी करती है। इस कंपनी का फैलाव विशेष रूप से दक्षिणी भारत में है।

चेन्नई से 60 किलो मीटर दूर चेंगलपेट नामक स्थान पर कंपनी का व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र है। यहीं पर युवाओं को प्रशिक्षित किया जाता है। प्रशिक्षण के बाद कंपनी अपनी देशभर में चल रही साइटों पर नौकरी देती है।

27 अगस्त को एक साथ 31 इ
निकल रहे थे चेन्नई की ओर। मन मे
और उत्साह इनमें साफ झलक रह
डूंगरपुर, बांसवाड़ा, राजसमंद, अजमेर
से आए थे। सभी उदयपुर में फतहपु
में आजीविका ब्यूरो के बुलावे पर इ

अपने घर–परिवार से इतनी दू
खास मकसद था। ये सभी सीसी
रोजगार के लिए गए हैं। यहां पहले 3
दिया जाएगा। साथ इन्हें तीन प्रतिमाह भत्ता आवास व भोजन भी कंपनी ही चेन्नई का किराया भी दिया है। कंपनी इलेक्ट्रीकल सर्वेयर जैसे प्रशिक्षण देगी।

युवाओं ने
चेन्नई यात्रा
मौके पर 'लेबर
को अपने विच
हैं। इन्हें हम
कर रहे हैं।
एक्सप्रेस' की
सभी युवाअ
शुभकामनाएं।

बाद सभी को कंपनी द्वारा पांच हजार
भी दी जाएगी। साथ ही अन्य स
सुविधाएं भी होंगी।

युवाओं को हुनरमंद काम के अ
में रोजगार मिले। इसी मकसद से रा
सीसीसीएल और आजीविका ब्यूरो ने
है। आजीविका ब्यूरो ने युवाओं का अ
किया है। दूसरा समूह भी जल्दी ही
तक भेजने के तैयारी की जा रही है

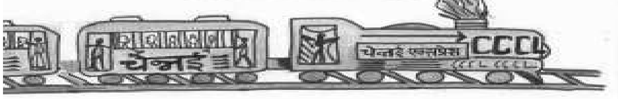

नौजवानों की कलम

स, तो क्या दूर क्या पास

साथ 31 युवा हाथ में सामान लिए ओर। मन में सपने संजोये, पूरा जोश झलक रहा था। ये उदयपुर समेत मंद, अजमेर, टोंक और जयपुर जिलों र में फतहपुरा स्थित मंगल श्री गार्डन ुलावे पर इकट्ठे हुए थे।

से इतनी दूर चेन्नई जाने का इनका सभी सीसीसीएल नामक कंपनी में यहां पहले 3 माह तक इनको प्रशिक्षण प्रशिक्षण के हजार रुपए मिलेगा। की व्यवस्था करेगी। साथ आने-जाने कंपनी ने ही कारपेंटर, मेकेनिकल, व्यवसाय में प्रशिक्षण के पांच हजार रुपए के वेतन पर नौकरी ही अन्य सामाजिक सुरक्षा से जुड़ी

ुवाओं ने अपनी ई यात्रा के इस पर 'लेबर एक्सप्रेस' अपने विचार लिखे इन्हें हम प्रकाशित रहे हैं। 'लेबर प्रेस' की ओर से ी युवाओं को ामनाएं। -संपादक

काम के अवसर मिलें। बड़ी कंपनियों कसद से राजस्थान आजीविका मिशन, विका ब्यूरो ने यह साझा प्रयास किया ुवाओं का अभी पहला समूह ही रवाना ी जल्दी ही अक्टूबर व नवम्बर महीने ा जा रही है।

घर की चिन्ता मत करना

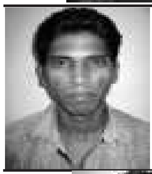
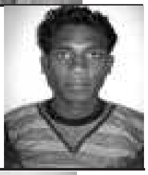

शुरू में तो घरवालों ने कहा कि इतनी दूर क्यों जा रहे हो। काम तो इधर भी मिल जाएगा। फिर हमने बताया कि सीसीसीएल भारत की बड़ी कंपनियों में से है। यहां काम सिखाकर नौकरी भी मिल रही है। अवसर अच्छा है। वेतन तो अच्छा है ही। अन्य सुविधाएं भी काफी हैं।

फिर घरवालों ने आशीर्वाद दिया। हमसे कहा कि चेन्नई में 3 महीने ठीक से काम सीखना। सभी से मिलकर रहना। अपने खान पान का ध्यान रखना। गांव से इतनी दूर अभी तक कोई नहीं गया है। तुम लोग संभलकर जाना। यहां घर की चिन्ता मत करना। काम में ही मन लगाना। **–किशनपुरी, पीपलू जिला टोंक, संतोष मीणा व प्रकाश मीणा आसपुर जिला डूंगरपुर, नोजाराम कटारा व मोतीलाल कटारा झाड़ोल जिला उदयपुर**

हुनर ही विनर है

हर बन्धु से मेरी उम्मीद है कि कोई काम छोटा नहीं समझें। मंहगाई के इस दौर में आजीविका का स्रोत होना चाहिए। हाथ के हुनर से किस्मत बनती है। एक दिन फल जरूर मिलता है। **–रामअवतार यादव, पीपलू जिला टोंक**

मौके अभी भी हैं

चेन्नई में युवाओं का दूसरा बैच अक्टूबर–नवम्बर महीने में भेजा जाएगा। नीचे लिखे गए पद व योग्यता अनुसार आवेदन किया जा सकता है।

- *कारपेंटर (आठवीं)* • *मेकेनिकल (दसवीं)*
- *इलेक्ट्रिकल (बारहवीं)* • *सर्वेयर (बारहवीं)*

अठारह से पच्चीस वर्ष की आयु के युवा आवेदन कर सकते हैं। युवा का वजन 50 किलो व लम्बाई 150 सेंटीमीटर कम से कम होनी चाहिए। आवेदन के साथ 50 रुपए शुल्क एवं सुरक्षा राशि रुपए 800 जमा करानी होगी। सुरक्षा राशि चेन्नई रवानगी पर लौटा दी जाएगी। मोबाइल नंबर 9214203401 या 9414934267 पर संपर्क करें।

दिल धड़कता है कि...

उदयपुर जिले के ऋषभदेव के ***सुरकेश मीणा*** ने लिखा है कि चेन्नई के बारे में सूचना मिलते ही मैंने अपना नाम लिखा दिया। लेकिन मन में डर था पता नहीं मेरा चयन होगा कि नहीं। दूसरा घरवाले भी मना कर रहे थे।

हरीश चंद्र खराड़ी डूंगरपुर जिले की बिच्छीवाड़ा के हैं। लिखा है कि चेन्नई जाने की बहुत इच्छा थी। मेरे मन में लेकिन इतनी दूरी पर जाने का डर भी था। पता चला कि

हम करीब 30 लोग साथ हैं तो डर निकल गया। चेन्नई में इलैक्ट्रिकल का काम करूंगा। वहां की बोलचाल रहन–सहन समझने में थोड़ी कठिनाई आ सकती है। विश्वास है धीरे–धीरे सब ठीक हो जाएगा। मैं चेन्नई जाकर एक अलग पहचान बनाना चाहता हूं।

उदयपुर जिले की खेरवाड़ा तहसील के ***प्रकाश चंद्र कलासुआ, राजेन्द्र खराड़ी*** और ***श्रवण कुमार पाण्डोर*** को एक जैसा ही डर था। इन्होंने लिखा है कि इतनी दूरी पर

जाने की थोड़ी घबराहट थी। वहां का रहन–सहन कैसा होगा। राजस्थान से चेन्नई की काफी दूरी है। लेकिन वहां के और कंपनी के बारे में जानकर मेरा डर दूर हो गया।

उदयपुर जिले की झाडोल तहसील के ***शंकर सोलंकी*** ने लिखा है कि चेन्नई शहर में अनजान रहूंगा। दूसरा इतना लम्बा सफर भी मैं पहली बार करूंगा। इसका मुझे डर सता रहा था। मगर कई युवा साथ हैं। इसलिए मैं भी जा रहा हूं।

आजीविका ब्यूरो के सहयोग से हमें चेन्नई जाने का अवसर मिला है। यहां आकर हुनर के बारे में समझ बनी है। मुझे पूरा विश्वास है कि हम सभी साथियों का भविष्य उज्जवल रहेगा। **–पप्पू यादव, पीपलू जिला टोंक**

आजीविका ब्यूरो में अगस्त 2010 तक

युवाओं को प्रशिक्षण व नौकरी

2562

- अब तक कुल 86 बैच प्रशिक्षण के हुए हैं। इनमें 1292 युवाओं ने काम सीखा, फिर काम पर लगे।
- इसके अलावा ब्यूरो ने 1270 युवाओं को सीधे काम से जोड़ा है।

रूपलीबाई ने की भविष्य की सुरक्षा

अपने परिवार पर पीछे से कोई आर्थिक संकट ना आए शायद यही सोचकर रूपलीबाई बीमा योजना से जुड़ीं। फलस्वरूप रूपलीबाई अपने जाने के बाद भी परिवार को कुछ राशि देकर ही गईं।

रूपलीबाई मीना अब इस दुनिया में नहीं हैं। इनकी पिछले मई माह में एक हादसे में मौत हो गई। रूपलीबाई उदयपुर जिले की सलूम्बर तहसील के बेडावल की रहने वाली थीं। आसपास मजदूरी करती थीं। इनके पति देवाजी मीणा भी मजदूरी करते हैं।

गांव में जब रूपलीबाई मजदूरी करती थीं तब इनका संपर्क श्रमिक सहायता केन्द्र सलूम्बर से हुआ। केन्द्र द्वारा इन्हें मालूम चला कि मजदूरों के लिए बीमा कवच नाम की दुर्घटना बीमा पॉलिसी है। इससे भविष्य की सुरक्षा की जा सकती है। प्रीमियम भी काफी कम है। यदि दुर्घटना में मौत हो जाए तो प्रीमियम राशि के सौ गुना राशि कंपनी द्वारा परिजनों को मिलेगी। यह पॉलिसी बिरला सनलाइफ कंपनी की थी।

रूपलीबाई को यह बात जम गईं। इन्होंने तुरन्त खुद बीमा पॉलिसी लेने का निर्णय लिया। रूपलीबाई मात्र 100 रुपए बीमा प्रीमियम राशि देकर बीमा से जुड़ गईं। इस बारे में इन्होंने अपने परिवार में कुछ नहीं बताया। यह जनवरी महीने की बात है।

बीमा लेने के करीब 5 माह बाद ही रूपलीबाई एक हादसे में चल बसीं। एक दिन वह बकरियों के लिए पेड़ पर चढ़कर पत्ते काट रही थी। अचानक पेड़ से गिर गई। वहीं उनकी मौत हो गई।

इनकी मौत के बाद रूपलीबाई के सामान से बीमा पॉलिसी निकली। साथ में श्रमिक सहायता केन्द्र सलूम्बर की रसीद भी थी। इनके पति देवाजी ने तुरन्त केन्द्र पर संपर्क किया। घटना की सारी जानकारी दी। केन्द्र ने तत्परता दिखाते हुए बिरला सनलाइफ कंपनी को पूरी जानकारी दी। साथ ही जरूरी कागजी कार्रवाई पूरी की। कंपनी व केन्द्र ने मिलकर घटना की सत्यता की जांच की। सरपंच व रूपलीबाई के परिजनों के बयान लिए गए।

सारी कार्रवाई पूरी होते ही केवल 2 माह के अंदर कंपनी ने बीमा राशि 10 हजार रुपए का चैक भेज दिया। यह चैक रूपलीबाई के पति देवाजी मीणा के नाथ था।

हालांकि रूपलीबाई की कमी तो परिवारजनों को हमेशा रहेगी ही। यह किसी के हाथ में भी नहीं है। परन्तु रूपलीबाई के जो हाथ में था उन्होंने समय रहते किया। बीमा पॉलिसी लेकर अपने परिवार पर आर्थिक संकट नहीं आने दिया। ये रूपलीबाई के भविष्य की सोच का ही तो नतीजा था।

सरकार ने जारी किए पेंशन विवरण

सरकार ने विश्वकर्मा पेंशन योजना से जुड़े श्रमिकों के वार्षिक विवरण जारी कर दिए हैं। ये विवरण पेंशन योजना से जुड़े हर श्रमिक के नाम से हैं। इसमें 31 मार्च 2010 तक पेंशन योजना के तहत कुल जमा राशि का ब्यौरा है। व्यक्ति ने कितनी राशि जमा की है। सरकार ने अपने अंशदान की कितनी राशि डाली है। साथ ही कुल कितना ब्याज मिला है। यह सब इस विवरण में लिखा गया है।

आप सभी को याद होगा कि राजस्थान सरकार द्वारा श्रमिकों के लिए पेंशन योजना शुरू की गई है। इस योजना का नाम राजस्थान विश्वकर्मा गैर संगठित कामगार पेंशन योजना है।

योजना से जुड़ने वाले मजदूर का एक पेंशन खाता खुलता है। इस खाते में हर साल एक हजार रुपए जमा कराने होते हैं। सरकार भी इतने ही रुपए मजदूर के पेंशन खाते में डालती है। इस राशि पर आठ प्रतिशत ब्याज भी मिलता है।

योजना में जिन मजदूरों को शामिल किया गया है, वे हैं– रिक्शा चालक, सभी थड़ी वाले, चमड़े का काम, हमाल, टैक्सी– ऑटो ड्राइवर, घरेलू नौकर, मोटर मैकेनिक, नाई, मूर्तिकार/पत्थर तराशी, दुकान/होटल/ढाबों पर काम करने वाले, बीडी मजदूर, निर्माण मजदूर, धोबी, दर्जी, कुम्हार, ठेला चालक, बढ़ई, बिजली मिस्त्री, लौहार और नल फिटिंग मिस्त्री।

आजीविका ब्यूरो के सभी केन्द्रों पर पेंशन योजना के आवेदन भरवाए जा रहे हैं। आजीविका ब्यूरो ने अब तक 1730 श्रमिकों के आवेदन भरे हैं। इन श्रमिकों के पेंशन विवरण ब्यूरो में आ गए हैं। ब्यूरो के श्रमिक सहायता केन्द्रों से विवरण प्राप्त किए जा सकते हैं।

कम प्रीमियम, अधिक सुरक्षा

जनता दुर्घटना बीमा योजना

कम राशि देकर दुर्घटना बीमा पॉलिसी ली जा सकती है। ऐसी युनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी की एक दुर्घटना बीमा पॉलिसी है। इसका नाम है जनता व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा पॉलिसी।

इस पॉलिसी से 10 से 70 वर्ष की आयु के व्यक्ति जुड़ सकते हैं। एक वर्ष के बीमा की प्रीमियम राशि 15 रुपए से लेकर 60 रुपए तक है। बीमा राशि 25 हजार के लिए 15 रुपए, 50 हजार के लिए 30 रुपए प्रीमियम है। वहीं 75 हजार के लिए 45 और 1 लाख के बीमा के लिए मात्र 60 रुपए प्रीमियम देना होगा।

बीमाधारी व्यक्ति की किसी दुर्घटना में मौत हो जाने पर बीमा रकम कंपनी द्वारा दी जाएगी। वहीं दुर्घटना में शरीर का कोई अंग खराब होने पर भी कुछ राशि दिए जाने की व्यवस्था है। बीमा राशि कंपनी के नियम के अनुसार दी जाएगी।

बीमा राशि	प्रीमियम
25 हजार	रुपए 15
50 हजार	रुपए 30
75 हजार	रुपए 45
एक लाख	रुपए 60

दुर्घटना में दंगा, हड़ताल, आतंकवाद, बिजली करंट तथा सांप के काटने को भी शामिल किया जाएगा।

इस पॉलिसी से जुड़ने के लिए आजीविका ब्यूरो में संपर्क किया जा सकता है। इसका एक बहुत ही साधारण फार्म है। इसे भरकर पॉलिसी से जुड़ा जा सकता है।

ब्यूरो में बीमा तथा पेंशन योजना के फार्म केवल हर सोमवार व मंगलवार ही भरे जाते हैं।

आजीविका ब्यूरो में सितम्बर 2009 तक

कानूनी मदद	मुआवजा
704 विवाद दर्ज	24 लाख
336 समाधान	ये सभी समाधान श्रमिक केन्द्रों ने मध्यस्थता के आधार पर किए हैं। कुछ मामले श्रम विभाग को भी दिए हैं।

सोलह विजेता–चार

कभी मिस्त्री तो कभी ठेकेदार

यह सच्ची कहानी आजीविका ब्यूरो की 'सोलह विजेता' पुस्तक से ली गई है। यह पुस्तक दिसम्बर 2007 में लिखी गई थी। हो सकता है इसके पात्रों के जीवन स्थिति में अब बदलाव आ गया हो। किन्तु इस कहानी में हमने कोई नवीन बदलाव नहीं किये हैं। –संपादक

राजसमन्द जिले की कुम्भलगढ़ तहसील की मझेरा पंचायत में स्थित खारचा भागल में रहता है 26 वर्षीय परताराम गमेती। परताराम ने बारह साल की उम्र में मुम्बई जाकर साफ–सफाई व झाड़ू–पोंछे का काम शुरू किया था। आज वही परताराम चिनाई कार्य में न केवल ठेकेदार हो गया है, बल्कि मझेरा में सफल प्रवासी के रूप में एक जाना–पहचाना नाम भी हो गया है।

झाड़ू–पोंछे का काम

परताराम ने कभी स्कूल की दहलीज पर कदम नहीं रखा। निरक्षर परताराम ने 12 साल की उम्र में ही कमाने का इरादा बनाया। उस समय परताराम का बड़ा भाई गजीग राम मुम्बई में एक हार्डवेयर की दुकान पर काम करता था। परताराम भी बड़े भाई की उंगली थामकर मुम्बई जा पहुंचा। वह भी उसी दुकान में साफ–सफाई, झाड़ू–पोंछा, बिखरे सामानों को एक जगह रखना जैसे कार्य करने लगा। बदले में उसे 500 रुपए मासिक पगार मिलती। दुकान पर उसे रोज 12 घंटे काम करना पड़ता। परताराम एवं उसके भाई के रहने व खाने की व्यवस्था इसी दुकान के एक दूसरे हिस्से में की गई थी। परताराम यहां लगातार सात साल तक काम करता रहा।

एक ही जगह सात वर्ष पूरे होने के बाद परताराम की इच्छा हुई कि मुम्बई छोड़कर कोई दूसरा कार्य किया जाए। मनमौजी परताराम ने सहसा ही मुम्बई छोड़ दिया। वह अपने गांव मझेरा वापस आ गया।

भेड़ चराने लगा

परताराम एक साल तक घर बैठने के बाद रेबारियों के साथ भेड़ चराने का काम करने लगा। परताराम मालवा क्षेत्र में भेड़ चराने जाता। सभी लोग खुले में डेरे बनाकर रहते थे। इस काम के बदले परताराम को शुरुआती 6 माह में 300 रुपए प्रतिमाह मिले, फिर पगार बढ़कर 500 रुपए हुई, और डेढ़ साल बाद 700 रुपए। रेबारियों के साथ घूमता परताराम साल में एक–दो बार ही घर आता था। परताराम ने भेड़ चराने का यह काम तीन साल तक किया, फिर छोड़ दिया। काम छोड़ने के बारे में परताराम कहता है, ''वह काम बहुत खराब था। पूरे दिनभर घूमते–फिरते रहते, मन में आता था कि यह काम छोड़कर चिनाई का काम करूं लेकिन उम्र कम होने की वजह से परिवारवालों ने चिनाई का काम लेने से मना कर दिया। लेकिन फिर भी मैंने अपनी इच्छानुसार चिनाई कार्य को ही चुना।''

स्वाति मुखर्जी

बेलदारी शुरू की

इस बार परताराम आमेट के घेरीलाल के संपर्क में आया। घेरीलाल अहमदाबाद में चिनाई कार्य का ठेकेदार था। परताराम भी घेरीलाल के साथ रहकर बेलदारी करने लगा। इसमें 30 रुपए दैनिक मजदूरी मिलती। एक साल के भीतर ही परताराम बेलदारी का कार्य करते–करते मिस्त्री का काम सीख गया। अब घेरीलाल अहमदाबाद चिनाई कार्य में ठेके लेता जबकि परताराम वहां मिस्त्री का काम करता। परताराम की मजदूरी भी 30 रुपए से दुगुनी होकर 60 रुपए हो गई। उसने इस प्रकार घेरीलाल के साथ रहकर 6 माह तक चिनाई मिस्त्री का काम किया।

यहां से काम छोड़ने के बारे में परताराम कहता है, ''बेलदारी में पैसा कम मिलता था, लेकिन मैंने चिनाई का काम छोड़ा नहीं। मुझे चिनाई का कार्य सीखना था। चिनाई का कार्य सीखकर जब मिस्त्री का काम करने लगा तो भी मुझे कम पैसा मिलता। घेरीलाल से पैसा बढ़ाने के लिए कहा लेकिन उसने पैसा बढ़ाया नहीं और इसीलिए मैंने वहां से काम छोड़ दिया।''

अहमदाबाद से काम छोड़कर परताराम वापस गांव आ गया। गांव में पहचान होने से परताराम चिनाई का काम करने देसूरी चला गया। वहां उसे 100 रुपए प्रतिदिन के हिसाब से मजदूरी मिलती। रहने व खाने की व्यवस्था भी मकान मालिक की तरफ से ही होती। तीन माह का यह काम पूरा करने के बाद परताराम ने अपने गांव मझेरा आकर भी चिनाई के काम को ही जारी रखा। परताराम 100 रुपए रोज की हाजरी के हिसाब से मजदूरी लेता और कभी–कभी केलवाड़ा में भी चिनाई करने चले जाता। परताराम ने यहां पांच माह तक काम किया।

बन गया मिस्त्री

अब तक परताराम का हाथ मंज गया था। वह चिनाई में निपुण हो गया था। मिस्त्री का काम करने के साथ–साथ उसने चिनाई कार्य के ठेके लेने की सोची। परताराम ने फिर अपना सबसे पहला ठेका केलवाड़ा के पास स्थित गंगलाइयां गांव में लिया। इस काम में उसने सात और मजदूरों को काम पर लगाया और पांच माह के भीतर इस काम को पूरा कर दिया। दुबारा से ठेका ना मिलते देख परताराम भीलवाड़ा के बलवास में चिनाई का काम करने चला गया, जहां उसने हाजरी पर 125 रुपए दैनिक मजदूरी से काम किया। परन्तु, बारिश आ जाने से परताराम को बलवास से वापस गांव आना पड़ा।

गांव में कुछ दिन बैठने के बाद परताराम एक बार फिर घेरीलाल के संपर्क में आया। घेरीलाल के पास एक माह का काम था, इसलिए परताराम वापस मुम्बई चिनाई का कार्य करने चला गया। अब परताराम चिनाई कार्य में निपुण मिस्त्री हो गया था, इसलिए मुम्बई में उसे 300 रुपए प्रतिदिन के हिसाब से मजदूरी मिलने लगी। एक माह बाद मुम्बई में काम पूरा करके परताराम गांव आ गया।

मिल गया ठेका

कुछ ही दिनों के भीतर वह फिर से चिनाई कार्य करने चला जाएगा। इस बार वह अहमदाबाद में काम करने जाएगा। वहां परताराम ने एक मकान बनाने का ठेका लिया है। हालांकि ठेकेदारी काम की बजाय परताराम मिस्त्री वाले काम को ही अच्छा मानता है। परताराम कहता है, ''मैंने दो बार ठेके लिए लेकिन काफी माथापच्ची करनी पड़ी। मजदूरों से काम को लेकर बहस होती। मिस्त्री का काम ही ठीक है। इस काम में दिन की निश्चित पगार तो मिल जाती है।''

परताराम का परिवार सम्पन्न है। अपनी मेहनत की बदौलत परताराम ने खारचा भागल स्थित अपने मकान को पक्का बना लिया है। मझेरा में भी उसने जमीन खरीद ली है। जल्दी ही परताराम मकान बनाने का काम शुरू करवाने वाला है।

बहरहाल, परताराम अपनी रुचि के चिनाई कार्य को कभी मिस्त्री बनकर तो कभी ठेकेदार बनकर आगे बढ़ा रहा है। उसे कभी ठेकेदार बनने का अहंकार नहीं होता। अगर ठेके से काम मिल जाए तो ठीक वरना मिस्त्री बनकर ही हाजरी से काम कर लेता है। (समाप्त)

ठेकेदार के चंगुल से निकलकर पैदल लौटना पड़ा

घर से दूर जाकर एक महीने तक खूब काम किया। ना तो मजदूरी मिली और ना ही खाना–पीना। काम के बदले मिली तो सिर्फ जान से मारने की धमकी। आखिरकार जान बचाकर वापस लौटना पड़ा। किराए के पैसे भी नहीं थे। इसलिए 3 दिन तक पैदल चलकर जयपुर पहुंचे। ये बात जुलाई महीने की है।

ये आपबीती सुनाई है 34 मजदूरों ने। ये सभी बारां जिले की शाहबाद तहसील के गोयरा गांव के आदिवासी सहरिया जाति के हैं। इनको बारां का ही बबलू नाम का ठेकेदार अच्छा काम दिलाने का झांसा देकर अलवर ले गया। ठेकेदार ने बताया कि 5500 रुपए महीने मजदूरी मिलेगी। सभी को रहने व खाने की सुविधा मिलेगी। साथ ही हरेक को मोबाइल भी दिलाया जाएगा।

ठेकेदार के इसी भरोसे पर सभी मजदूरी के लिए चले गए। बबलू ठेकेदार इन्हें बारां से अलवर लेकर गया। सभी को अलवर में एक दूसरे ठेकेदार मोहम्मद खान के हवाले कर दिया। खान अपनी मनमर्जी से सभी को काम पर लगाता रहा। कभी पाइप बनाने तो कभी पाउडर बनाने के कारखाने में।

शुरू में खान ने राशन के लिए एक दुकान तय कर दी। लेकिन 15–20 दिन बाद खान ने ही दुकानवाले को राशन देने से मना कर दिया। इस बीच सभी मजदूर अपने पास से ही खर्चा चलाते रहे। एक महीना बीत गया। सभी मजदूरों ने खान से मजदूरी मांगी तो खान ने मना कर दिया। मजदूरों को धमकाने लगा। मजदूरों ने जब काम करने से मना किया तो खान ने जान से मारने की धमकी दी। कुछ मजदूरों ने जब विरोध किया तो उनसे मारपीट भी की।

आखिरकार सभी मजदूरों को वहां से वापस भागना पड़ा। वापस आने के लिए किराए के पैसे नहीं थे। तो सभी भिवाड़ी से पैदल चल दिए। तीन दिन बाद जयपुर पहुंचकर रेलवे स्टेशन पर बैठ गए।

इसकी सूचना जयपुर में काम कर रही विविधा संस्था को लगी। इन्होंने तुरन्त जयपुर श्रमिक सहायता केन्द्र को सूचित किया। जयपुर केन्द्र की टीम तुरन्त रेलवे स्टेशन पहुंची। वहां मजदूरों से मिलकर उनकी आपबीती सुनी।

सभी मजदूर थके–हारे और भूखे प्यासे थे। सबसे पहले सभी को खाना खिलाया गया। इसके बाद शाम की गाड़ी से इन सभी का बारां का टिकट करवा कर रवाना किया। जयपुर के कुछ संस्था व संगठन भी मजदूरों की मदद के लिए आगे आए हैं। ये हैं–विविधा, सिकोइडिकोन, दिगन्तर, राजस्थान विश्वकर्मा निर्माण मजदूर संघ एवं सहरिया विकास मंच।

श्रमिक केन्द्र जयपुर और राजस्थान विश्वकर्मा निर्माण मजदूर संघ मजदूरों को भुगतान और दोषियों को सजा दिलाने के लिए प्रयास कर रहा है। इस मामले को लेकर श्रम विभाग को भी सूचित किया है।

–रामप्रसाद गुर्जर

मजदूरी दिलाने हेतु अब तक प्रयास

- *राजस्थान विश्वकर्मा निर्माण मजदूर संघ एवं आजीविका ब्यूरो ने श्रम आयुक्त को 23 जुलाई को दोषी ठेकेदार के खिलाफ कार्रवाई हेतु ज्ञापन दिया है।*
- *शाहबाद (बारां) में भी अतिरिक्त जिला अधिकारी को भी मामले की सूचना दी है। मजदूरों द्वारा पुलिस में रिपोर्ट भी दर्ज कराई है।*
- *श्रमिकों को केवल ठेकेदार का नाम ही मालूम है। ठेकेदार का पूरा पता तथा कारखाने का नाम आदि की कोई जानकारी नहीं थी। बारां के सहरिया विकास मंच एवं दिगन्तर संस्था के जरिए ठेकेदार का मूल पता ढूंढ लिया गया है। कारखानों का भी पता लगा लिया है जहां श्रमिकों ने काम किया था। यह सारी जानकारी श्रम विभाग को भी दे दी गई है।*
- *श्रम विभाग पर बनाए लगातार दबाब के चलते श्रम विभाग ने भिवाड़ी के ठेकेदार मुहम्मद खान से संपर्क कर लिया है। ठेकेदार का कहना है कि वह श्रमिकों को कुछ राशी अग्रिम दे चुका है। अन्य बकाया राशी देने को वह तैयार है।*
- *सहयोगी संस्थाओं के माध्यम से श्रमिको को मिली अग्रिम राशि की जानकारी प्राप्त की जा रही है। इस जानकारी को संस्थाओं द्वारा शीघ्र ही श्रम विभाग को भेजा जाएगा ताकि मजूदरों का तुरन्त बकाया भुगतान हो सके।*

मामले में ये आई बाधाएं

- *किसी भी मजदूर के पास मोबाइल फोन नहीं था। इस कारण इनको ढूंढ़ने में काफी मुश्किल आई।*
- *जयपुर रेल्वे स्टेशन पर माइक में आवाज लगवाई गई। मजदूरों को डर था कि कहीं ठेकेदार ही तो हमें नहीं बुला रहा। इसलिए वे बार–बार आवाज सुनने के बाद भी पूछताछ खिड़की पर नहीं आ रहे थे।*
- *ठेकेदार के नाम के अलावा कुछ भी जानकारी मजदूरों के पास नहीं थी। इससे ठेकेदार से संपर्क करना काफी मुश्किल रहा। ना ही कारखाने का नाम मालूम था ना ही वहां का पता।*

बुक पोस्ट

"आजीविका ब्यूरो" उदयपुर के लिए निदेशक द्वारा प्रकाशित एवं यूनिक प्रिन्टिंग प्रेस, उदयपुर द्वारा जनहित में मुद्रित एवं प्रसारित।

सलाहकार : राजीव खण्डेलवाल, हिम्मत सेठ, कैलाश बृजवासी, कृष्णावतार शर्मा

सम्पादन : कमलेश शर्मा, जितेन्द्र जैन

aajeevika bureau

आजीविका ब्यूरो

38, साइफन कॉलोनी, बेदला रोड, उदयपुर–313004 (राजस्थान)

फोन : 0294–2454092 बेवसाइट : www.aajeevika.org

ईमेल : info@aajeevika.org